

डॉ. केविन ई. फ्रेडरिक, वाल्डेन्सियन, व्याख्यान 10, संकट की केंद्रीयता, जोशुआ जनवेल

© 2024 केविन फ्रेडरिक और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र संख्या 10 है, परेशानी की केंद्रीयता, जोशुआ जोनावेल।

इस धर्मोपदेश का शीर्षक है, संकट की केंद्रीयता। जोशुआ जोनावेल, घाटियों का शेर। आज के धर्मोपदेश के लिए पवित्रशास्त्र का अंश इब्रानियों 11 पर है, जो पद 32 से शुरू होकर पद 12, पद 2 तक जाता है। और मैं और क्या कहूँ? क्योंकि मेरे पास गिदोन, बाराक, शिमशोन, यिप्तह, दाऊद और शमूएल और भविष्यद्वक्ताओं के बारे में बताने के लिए समय नहीं है, जिन्होंने विश्वास के द्वारा राज्यों को जीता, न्याय किया, वादे प्राप्त किए, शेरों के मुँह बंद किए, भड़की हुई आग को बुझाया, तलवार की धार से बच गए, कमज़ोरी से ताकत हासिल की, युद्ध में शक्तिशाली बने, विदेशी सेनाओं को भगा दिया।

महिलाओं को उनके मृत शरीर को जी उठने के द्वारा प्राप्त किया गया। दूसरों को यातनाएं दी गईं, बेहतर जी उठने के लिए रिहाई स्वीकार करने से इनकार कर दिया। दूसरों को उपहास और कोड़े मारे गए, और यहां तक कि जंजीरों और कारावास का सामना करना पड़ा।

उन्हें पत्थर मार-मारकर मार डाला गया। उन्हें आरे से दो टुकड़ों में काट दिया गया। उन्हें तलवार से मार डाला गया।

वे भेड़-बकरियों की खाल ओढ़े हुए, बेसहारा, सताए हुए और सताए हुए घूमते थे, जिनके लिए दुनिया योग्य नहीं थी। वे रेगिस्तानों और पहाड़ों और गुफाओं और ज़मीन के गड्ढों में भटकते रहे। फिर भी, हालाँकि उन्हें उनके विश्वास के लिए सराहा गया था, लेकिन उन्हें वह नहीं मिला जो वादा किया गया था क्योंकि परमेश्वर ने कुछ बेहतर प्रदान किया था ताकि वे, हमारे अलावा, सिद्ध न हो जाएँ।

इसलिये जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु और पाप जो हमें जकड़ लेता है, दूर करके, वह दौड़ जो हमें दौड़नी है, धीरज से दौड़ें, और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें। जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की दशा में क्रूस का दुख सहा, और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। यह प्रभु का वचन है। परमेश्वर का धन्यवाद हो।

हम गवाहों के एक समूह से घिरे हुए हैं, और इब्रानियों के पत्र के लेखक के शब्द एक प्रारंभिक ईसाई समुदाय के बारे में लिखे गए थे, जो दूसरी शताब्दी ई. की शुरुआत में पुराने नियम को दर्शाता है। लेकिन वे आसानी से वाल्डेन्सियन के बारे में लिखे जा सकते थे, न केवल एक व्यक्ति के रूप में उनके द्वारा सामना किए गए उत्पीड़न और यातनाओं के प्रकार के संबंध में, बल्कि उनके विश्वास की प्रतिक्रिया की प्रकृति में, जिसने रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा सदियों से उत्पीड़न

और कई अन्य कठिनाइयों को सहन किया। विश्वास का स्थायी दृढ़ संकल्प, लोगों के रूप में हमारे पिता और माताओं का विश्वास, चाहे हम रक्त से वाल्डेन्सियन हों, प्रेस्बिटेरियन या बैपटिस्ट, विश्वास के इन पूर्वजों ने किसी भी ईसाई लोगों के समूह के विश्वास का सबसे गहरा संकल्प प्रदर्शित किया, जिन्होंने कभी भी कठिनाई का सामना किया है। वाल्डेन्सियन लोगों के 800 से अधिक वर्षों के इतिहास का अध्ययन करने पर, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वाल्डेन्सियन लोगों और उनके अस्तित्व के लिए 17वीं शताब्दी से अधिक विनाशकारी कोई सदी नहीं है।

इससे पहले कि हम जॉन ऑफ एल नामक व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करें, मैं कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना चाहूंगा जो सामूहिक रूप से वाल्डेन्सियन के अस्तित्व को नष्ट करने के करीब पहुँच गईं। 1629 में, उत्तरी इटली में एक भयंकर सूखा पड़ा, जिसके परिणामस्वरूप एक भयानक अकाल पड़ा जिसने घाटियों में कई लोगों की जान ले ली। अगले वसंत के दौरान, लगभग उस समय जब किसान रोपण कर रहे थे और बेहतर मौसम की उम्मीद कर रहे थे, घाटियों में एक और भी बड़ी तबाही आई।

कब्जे वाले फ्रांसीसी सैनिकों के आगमन के साथ ही भयानक ब्लैक प्लेग आया जो पूरे यूरोप में तेजी से फैल रहा था। लगभग 50 प्रतिशत वाल्डेन्सियन आबादी प्लेग से नष्ट हो गई, और घाटी में हर पैरिश की सेवा करने वाले 16 वाल्डेन्सियन पादरियों में से 14 की प्लेग से मौत हो गई, जिससे शेष दो वाल्डेन्सियन पादरी कमजोर हो गए और पूरा वाल्डेन्सियन आस्था समुदाय शोक के लंबे दौर के दौरान पादरी नेतृत्व से लगभग पूरी तरह से वंचित हो गया। इन सबके बीच, हमारे पिताओं और माताओं का विश्वास जीवित रहा।

1630 के दशक में ब्लैक प्लेग की बड़ी तबाही से अभी भी उबरते वाल्डेन्सियन अभी पूरी तरह से उबर भी नहीं पाए थे कि ड्यूक ऑफ सेवॉय ने शेष वाल्डेन्सियन पर अत्यधिक आर्थिक कठिनाइयाँ और वित्तीय जुर्माना लगाने और 20,000 क्राउन का अत्यधिक जुर्माना लगाने का आदेश दिया। लेकिन वाल्डेन्सियन अपने विश्वास पर गर्व करते रहे और ड्यूक के प्रति शांतिपूर्ण रूप से वफादार भी रहे, और वे इससे ज़्यादा कुछ नहीं चाहते थे कि उन्हें अकेला छोड़ दिया जाए ताकि वे अपने आस-पास के बड़े रोमन कैथोलिक समुदाय की बाधा के बिना पूजा और जीवन जी सकें। अफसोस, ऐसा नहीं हो सकता।

एक सदी पहले सुधार के बाद से वाल्डेन्सियन के प्रति घृणा इतनी बढ़ गई थी कि 1650 के दशक में, फ्रांस के राजा लुई XIV और ड्यूक ऑफ सेवॉय चार्ल्स इमैनुएल, जो ड्यूक की माँ के वाल्डेन्सियन के प्रति मुखर तिरस्कार से प्रेरित थे, ने उनके पूर्ण विनाश की मांग शुरू कर दी। ड्यूक की माँ का नाम कैथरीन मैरी था। वह फ्रांसीसी राजा की बेटी और फ्लोरेंस के प्रसिद्ध रोमन कैथोलिक मेडिसी परिवार की पोती थी।

विनाश की इस योजना को ट्यूरिन के बिशप एंड्रयू गेस्टाल्डो ने भी बढ़ावा दिया था। नतीजतन, जनवरी 1655 में फ्रांसीसी राजा और सेवॉयर्ड ड्यूक, कैथरीन मैरी के बेटे द्वारा निष्कासन का आदेश दिया गया और उसे लागू किया गया। उस वर्ष 25 जनवरी को, विशेष रूप से क्रूर सर्दियों के बीच में, वे वाल्डेन्सियन जो अपने विश्वास को त्यागने और कैथोलिक धर्म में परिवर्तित नहीं हुए,

उन्हें बलपूर्वक उनकी सुरक्षित घाटियों से बेदखल कर दिया गया और अधिक सुलभ और कम सुरक्षित घाटियों में स्थानांतरित कर दिया गया।

उन्हें सवोयार्ड सैनिकों द्वारा गहरी बर्फ में खदेड़ दिया गया, जहाँ समुदाय के कई महिलाएँ, बच्चे और बुजुर्ग सदस्य ठंड से मर गए या बीमारी से मर गए। जो लोग अपने घरों में रह गए, उन्हें उनके रोमन कैथोलिक पड़ोसियों ने लूट लिया और उस वर्ष फरवरी तक ड्यूक ने वाल्डेन्सियन के घर में 1,000 से अधिक सैनिकों को तैनात कर दिया था। ये सैनिक मार्किंस डी पियानेसा की कमान में थे।

एक किसान जिसका नाम जोशुआ जानावेल है अकेले ही इस कार्रवाई को उत्पीड़न की एक कठोर लहर के अग्रदूत के रूप में मान्यता दी। जनवेल ने उस महीने रोरा के छोटे समुदाय में अपने घरों की रक्षा के लिए समर्पित 11 स्वयंसेवकों की एक टुकड़ी को इकट्ठा करना शुरू किया। वाल्डेन्सियनों में से कई ने जनवेल की तैयारियों का मजाक उड़ाया और कहा कि यह जल्दबाजी और अत्यधिक उत्तेजक है, और हिंसक, और परिणामस्वरूप, सामान्य बचाव के लिए कोई प्रावधान नहीं किया गया था।

लेकिन उस वर्ष अप्रैल के मध्य में, पियानेसा ने 15,000 सैनिकों की एक मजबूत सेना के साथ घाटियों में प्रवेश किया, और ईस्टर रविवार को, सूर्योदय से पहले, ड्यूक के सैनिकों ने हर उस घर पर एक सुव्यवस्थित हमला किया, जहाँ सवोयार्ड सैनिकों की चौकी थी। उस ईस्टर की सुबह के बाद जो हुआ वह विशेष रूप से क्रूर हमला था जिसमें पुरुषों और महिलाओं और यहाँ तक कि वाल्डेन्सियन बच्चों पर कई तरह की यातनाएँ शामिल थीं। एक विशेष रूप से क्रूर यातना में पीड़ितों के हाथ और पैर बाँधकर उन्हें चट्टानों पर लुढ़काना शामिल था।

वाल्डेन्सियन बच्चों और शिशुओं के खिलाफ अत्याचार करने में सवोयार्ड सैनिक और भी ज्यादा क्रूर थे। इन सैनिकों की कमान संभालने वाले कई फ्रांसीसी अधिकारी अपने सैनिकों की क्रूरता से इतने भयभीत थे कि उनमें से कई ने विरोध में अपने पद से इस्तीफा दे दिया। उस ईस्टर की रात तक, घाटियाँ नरसंहार के पीड़ित और जीवित बचे लोगों की चीखों से गूँज उठीं।

रोरा शहर, जिसमें लगभग 50 घर थे, जिसकी रक्षा जॉन ऑफ एल और 11 स्वयंसेवी किसानों ने की थी। अगले चार दिनों में, मार्किंस डी पियानेसा ने रोरा के रक्षकों को मारने के लिए लगातार बढ़ती संख्या में अपने सैनिकों की लहरें भेजीं। हर बार उन्हें भारी नुकसान उठाना पड़ा और वे घबराकर युद्ध के मैदान से भाग गए।

जॉन ऑफ एल ने शांत विश्वास का प्रदर्शन किया। प्रत्येक हमले के पीछे हटने से पहले और बाद में, वह अपने आदमियों को इकट्ठा करता और प्रार्थना करता। हमलों के बाद, वह 11वें भजन का पाठ करता और उन्हें दी गई सुरक्षा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता।

एक तरफ़, इस समय पियानेसा इतने गुस्से और शर्म से भर गया था कि उसने रोरा के छोटे से गाँव पर कब्ज़ा करने के लिए 8,000 लोगों के साथ पूरे हमले का आदेश दिया। इस बार वाल्डेन्सियन रक्षकों को पराजित किया गया और रोरा के 126 नागरिक मारे गए। जॉन ऑफ़ एल के 8 वर्षीय बेटे सहित कई अन्य लोगों को बंदी बना लिया गया।

यह एहसास होने के बाद कि जॉन ऑफ एल की पत्नी और बेटियाँ उसके पास हैं, मार्किंस डी पियानेसा ने जॉन ऑफ एल को एक पत्र लिखा और एक वाल्डेन्सियन कैदी को रिहा कर दिया ताकि वह पत्र सीधे जॉन ऑफ एल तक ले जाए। पत्र की सामग्री से संकेत मिलता है कि अगर जॉन ऑफ एल अपने धर्म को त्याग कर कैथोलिक धर्म अपना लेता है, तो उसे अपने सभी नुकसानों की भरपाई की जाएगी और उसकी पत्नी और बच्चों को तुरंत रिहा कर दिया जाएगा। इसके अलावा, उसे ड्यूक ऑफ सेवॉय की सेना में कमीशन की पेशकश की गई।

हालांकि, अगर जॉन ऑफ एल ने इन शर्तों को अस्वीकार कर दिया, तो उसकी पत्नी और बच्चों को मौत की सज़ा दी जाएगी, और उसके सिर पर भारी इनाम रखा जाएगा, जिससे सबसे मज़बूत सहयोगी भी उसे धोखा देने के लिए ललचाएंगे। जवाब में, जॉन ऑफ एल ने निम्नलिखित पत्र वापस भेजा: मेरे प्रभु मार्किंस, कोई भी पीड़ा इतनी बड़ी नहीं है या मृत्यु इतनी क्रूर नहीं है, लेकिन मैं अपने धर्म का त्याग करना पसंद करूंगा, ताकि वादे अपना असर खो दें, और धमकियाँ मुझे मेरे विश्वास में और मज़बूत करें। मेरी पत्नी और बच्चों के संबंध में, मेरे प्रभु, उनके कारावास के विचार से ज़्यादा मेरे लिए कुछ भी पीड़ादायक नहीं हो सकता है या मेरी कल्पना के लिए उनके हिंसक और क्रूर मौत से ज़्यादा भयानक कुछ भी नहीं हो सकता है।

मैं एक पति और माता-पिता की सभी कोमल भावनाओं को गहराई से महसूस करता हूँ। मेरा दिल मानवता की हर भावना से भरा हुआ है। मैं उन्हें खतरे से बचाने के लिए कोई भी कष्ट सहने को तैयार हूँ।

मैं उन्हें बचाने के लिए मर भी सकता हूँ। लेकिन इतना कहने के बाद, मेरे प्रभु, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि उनके जीवन की खरीद मेरे उद्धार की कीमत नहीं होनी चाहिए। वे आपके अधिकार में हैं, यह सच है, लेकिन मुझे तसल्ली इस बात से है कि आपकी शक्ति उनके शरीर पर केवल एक अस्थायी अधिकार है।

आप नश्वर भाग को नष्ट कर सकते हैं, लेकिन उनकी अमर आत्माएँ आपकी पहुँच से बाहर हैं और आपकी क्रूरताओं के लिए आपके खिलाफ गवाही देने के लिए आगे जीवित रहेंगी। इसलिए मैं उन्हें और खुद को भगवान के पास भेजता हूँ, और आपके दिल में सुधार के लिए प्रार्थना करता हूँ। जोशुआ जनवेल, हमारे पूर्वजों का विश्वास, पवित्र विश्वास, हम मृत्यु तक आपके प्रति सच्चे रहेंगे।

हममें से कौन अपने ही परिवार की आसन्न मृत्यु के सामने आस्था में ऐसा रुख अपनाएगा? जनवेल की पत्नी और बेटियों को यह पत्र मिलने के बाद पियानेसा ने सरसरी तौर पर मार डाला। जनवेल और उसका बेटा अपने अनुयायियों के साथ आल्प्स भाग गए और जल्द ही उनके साथ बढ़ती संख्या में अन्य भगोड़े प्रोटेस्टेंट शामिल हो गए जो लड़ने के लिए तैयार थे और यदि आवश्यक हो तो अपने उद्देश्य के लिए मर भी सकते थे। कई महीनों तक झड़पों और लड़ाइयों का सिलसिला जारी रहा, जिसमें सैन जैकोंडो पर हमला भी शामिल था, जिसे कैथोलिक सैनिकों द्वारा भारी किलेबंदी और बचाव किया गया था।

फिर भी, संख्या में कम होने के बावजूद, जनवेल और उसके सैनिकों ने प्रतिरोध को परास्त कर दिया, और बंदूक की गोलियों से खुद को बचाने के लिए अपने सिर पर लकड़ी के मोटे तख्ते रखकर खुले में खुद का बचाव किया। इस लड़ाई में, प्रोटेस्टेंटों ने 17 लोगों को खो दिया और 26 घायल हो गए, जबकि कैथोलिकों ने 450 लोगों को खो दिया और 511 घायल हो गए। जनवेल और वाल्डेन्सियनों को यह स्पष्ट था कि भगवान उनके घाटी के घरों की रक्षा करने के उनके प्रयासों में उनकी रक्षा कर रहे थे।

उस भयानक ईस्टर के परिणामस्वरूप, उस वसंत और गर्मियों के दौरान, वाल्डेन्सियनों के क्रूर नरसंहार की खबर पूरे प्रोटेस्टेंट यूरोप में, इंग्लैंड तक फैल गई, और इंग्लैंड के प्रसिद्ध प्रोटेस्टेंट लॉर्ड प्रोटेक्टर, ओलिवर क्रॉमवेल ने पूरे प्रोटेस्टेंट इंग्लैंड में पैरिशों को वाल्डेन्सियन निर्वासितों की देखभाल और समर्थन के लिए धन जुटाने के लिए प्रोत्साहित किया। यूरोप भर से छोटे-छोटे समूहों में भाड़े के प्रोटेस्टेंट वाल्डेन्सियनों की सहायता के लिए जुटने लगे, 16,000 की ताकत वाले दुश्मन का सामना करने के लिए 500 लोगों की एक सेना बनाई। उस गर्मियों में और भी झड़पें और लड़ाइयाँ हुईं, जिनमें से अधिकांश में बड़ी कैथोलिक सेना की हार हुई।

दो बार, जनवेल घायल हो गया, एक बार पैर में, और दूसरी बार, उसे सीने में गोली लगी, जिससे गोली उसके फेफड़े से होते हुए उसके शरीर से बाहर निकल गई। यह घाव घातक नहीं था, और वह छह सप्ताह के भीतर उल्लेखनीय रूप से ठीक हो गया और युद्ध के मैदान में अपने सैनिकों की कमान संभाल रहा था, हमारे पिता के पवित्र विश्वास के अनुसार। बार-बार, वाल्डेन्सियन ने वसंत और गर्मियों के महीनों में कैथोलिक सैनिकों को मात दी और अंत में, अगस्त में कैस्टेलस में, प्रोटेस्टेंट ने कैथोलिक सैनिकों को बुरी तरह से हरा दिया।

जब ल्यूसर्न के सिंडिक, एक कैथोलिक बिशप ने बड़ी संख्या में घायल कैथोलिक सैनिकों को लौटते देखा और वाल्डेन्सियन द्वारा फिर से हार के बारे में सुना, तो उसने टिप्पणी की, आह, मैंने सोचा था कि भेड़िये विधर्मियों को खा जाते थे, लेकिन अब मैं देख रहा हूँ कि विधर्मी भेड़ियों को खा रहे हैं, हमारे पिता के विश्वास को। जोशुआ जनवेल और वाल्डेन्सियन लोगों के रक्षकों के लिए, विश्वास केवल ईश्वर में विश्वास नहीं था। विश्वास जीवन और मृत्यु का मामला था।

आस्था एक आधार और दृढ़ विश्वास था कि सभी बाधाओं का सामना करते हुए, निश्चित मृत्यु का सामना करते हुए, ऐसी बाधाओं के बावजूद, ईश्वर हमें बताता है और हमें वफादार रहने के लिए आमंत्रित करता है, और ईश्वर उन लोगों को पुरस्कृत करता है जो अपने विश्वास से चिपके रहते हैं और ईश्वर के मार्गदर्शन की तलाश करते हैं। हमारे पूर्वजों का विश्वास तब भी नहीं डगमगाया जब घाटी दुश्मनों से भरी हुई थी, और रक्षक केवल बंदूकों के साथ मुट्ठी भर लोग थे। हमारे पूर्वजों के विश्वास ने उन्हें सुरक्षित रखने के लिए ईश्वर की दैवीय देखभाल और मार्गदर्शक आत्मा की तलाश की, यह अच्छी तरह से जानते हुए कि कोई अन्य बैकअप नहीं था।

इस तरह के विश्वास में एक लंबी स्मृति होती है जो उन पूर्वजों की कठिनाइयों को देखती है जिनका पीछा फिरौन की सेना ने किया था, उनके सामने मौत का समंदर था और पार करने का कोई रास्ता नहीं था। इस तरह के विश्वास ने ईस्टर की सुबह ऊपरी कमरे में डर से घिरे ग्यारह शिष्यों के समूह को देखा और खुद को सशक्त पाया। अगर आज सुबह इस नाटकीय आस्था की

कहानी को सुनकर आपका खून थोड़ा गर्म हो गया है, तो शायद यह आपका विश्वास है जो आपके भीतर जीवित अपनी शक्ति के बारे में गहरी जागरूकता में प्रज्वलित हुआ है।

हाँ, जैसा कि भजनकार कहते हैं, हमारे पास एक अच्छी विरासत है। संभावनाएँ प्रबल हैं कि हममें से कोई भी कभी भी जीवन या मृत्यु के निर्णयों और उसके परिणामस्वरूप होने वाली क्रियाओं का सामना नहीं करेगा, जिसका सामना जोशुआ जनवेल ने किया और जिसके अनुसार कार्य किया। लेकिन हम सभी को परमेश्वर के वादों के अनुसार जीने के लिए बुलाया गया है, किसी भी तरह की असफलताओं या हमारे विरुद्ध खतरों को हमें अपने विश्वास पर कार्य करने से रोकने की अनुमति नहीं देनी चाहिए, जैसा कि परमेश्वर हमें जीने के लिए कहता है।

जनवेल के विश्वास में प्रमाणित विश्वास के समान दृढ़ विश्वास और विश्वास की शक्ति के साथ जीते तो आज इस चर्च और हमारे जीवन का क्या होगा ? जनवेल, अपने बेटे के साथ, 1660 के दशक में जिनेवा में सेवानिवृत्त हुए, उन्हें उनके अपने लोगों ने निर्वासित कर दिया, जिन्होंने एक बार फिर सोचा कि वे ड्यूक ऑफ सेवॉय और कैथोलिकों के खिलाफ बहुत उत्तेजक थे। जनवेल उसके बाद कई वर्षों तक जीवित रहे और सूचना के स्रोत रहे और उन्होंने दिशा-निर्देशों का एक सेट भी विकसित किया जिसका आज भी अध्ययन किया जाता है। इन दिनों संयुक्त राज्य अमेरिका में वेस्ट प्वाइंट और सेना द्वारा सैन्य दिशा-निर्देशों का अध्ययन किया जाता है।

इस तरह के विश्वास ने हमारे जनवेल और मिशेलिन नाम के पूर्वजों और अन्य वाल्डेन्सियनों को प्रेरित किया है जो एक ऐसे दुश्मन के सामने पहाड़ों की ओर पीठ करके खड़े थे जो हथियारों से कम, संसाधनों से कम और पूरी तरह से कम संख्या में था, जिसका लक्ष्य न केवल अपने पूरे लोगों की मौत को सहना था बल्कि सभी बाधाओं के बावजूद जीत हासिल करना था। मैंने कल गाए जाने वाले भजन प्लूक - कॉवेंट - कोर्ट का चयन किया, जिसका अनुवाद वाल्डेन्सियनों के विश्वास को प्रदर्शित करने के लिए विजेताओं से अधिक है। इस भजन के शब्दों को अंग्रेजी में सुनें।

विजेताओं से भी बढ़कर, ऐसा हमारा प्रतीक है। विजेताओं से भी बढ़कर, भले ही हमें सताया गया हो, क्योंकि हमारे विश्वास की जीत उद्धारकर्ता के माध्यम से प्राप्त हुई थी जिसने हमें छुड़ाया। आइए हम कलवरी तक भी मसीह का अनुसरण करें।

आइए हम हमेशा उसकी मृत्यु को अपने सामने रखें। अगर हम पृथ्वी पर उसके साथ दुख उठाते हैं, तो हम स्वर्ग में उसके साथ राज करेंगे। आइए हम यीशु के नाम को स्वीकार करने के लिए गलत को चुनौती दें।

उसमें ही हमारी सारी उम्मीदें टिकी हुई हैं, और हमारी उम्मीदें धुंधली नहीं होंगी। अपने मरने के दिन तक जनवेल के सिर पर एक इनाम था, हर सर्वोयर्ड अधिकारी द्वारा दिए गए निर्देशों का एक खास सेट, ताकि अगर कभी महान जनवेल को पकड़ा गया तो उसे व्यवस्थित रूप से प्रताड़ित किया जाए। जनवेल ने रणनीति का एक सैन्य मैनुअल छोड़ा जिसका इस्तेमाल हेनरी अर्नल ने स्विट्जरलैंड में वाल्डेन्सियन पलायन और शानदार वापसी में बड़े पैमाने पर किया।

हम जल्द ही अपने अध्ययन में इसी विषय पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। यह प्रभु का वचन है। परमेश्वर का धन्यवाद हो।

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में है। यह सत्र संख्या 10 है, परेशानी की केंद्रीयता।